



International Journal of Advanced Research in Education and Technology (IJARETY)

Volume 11, Issue 5, September-October 2024

Impact Factor: 7.394



पर्यावरण संकट के कारक के रूप में ग्लोबल वार्मिंग: कारण, प्रभाव एवं समाधान

Harish Kumar

Net in Geography, Goliya Jetmal, Barmer, Rajasthan, India

शोध सार: हाल ही के वर्षों तक ग्लोबल वार्मिंग को आमतौर पर संशय की दृष्टि से देखा जाता था, लेकिन अब यह एक कटु हकीकत के तौर पर हमारे द्वार पर दस्तक दे चुकी है और इसका प्रभाव हम साफ-साफ महसूस करने लगे हैं। दुनियाभर में तेजी से मिलते ग्लेशियर, समुद्र के जलस्तर में दर्ज की गई वृद्धि, विलुप्त होती वनस्पति और जीव-जंतुओं की प्रजातियां, मौसम के मिजाज में दिखने वाली उलट-पुलट यह विश्वास दिलाने के लिए काफी है कि इस दिशा में वक्त हमारे हाथ से खिसकता जा रहा है।

दरअसल, हमारे सौर मण्डल में कई ग्रह या तो ज्यादा गर्म या ज्यादा ठण्डे होते हैं। लेकिन पृथ्वी का वातावरण मध्यम होता है। यही वजह है कि यहां पर जीवन संभव है। लेकिन पिछले काफी सालों में पृथ्वी का तापमान अस्थिर हो रहा है। कहने का मतलब है कि पृथ्वी का तापमान का औसत तापमान से ज्यादा बढ़ गया है और इसे ही ग्लोबल वार्मिंग कहा जाता है और यह सजीव जीवन के लिए एक बुरा संकेत है।

अर्थात विभिन्न गतिविधियों के कारण जब पृथ्वी का तापमान लगातार बढ़ रहा हो, उसे ग्लोबल वार्मिंग कहते हैं। सूर्य की कई किरणें वायुमंडल से होती हुई पृथ्वी की सतह से टकराती हैं, और फिर परावर्तित होकर वापस लौट जाती हैं। लेकिन पृथ्वी का वायुमंडल कई वायु से मिलकर बना है। इसमें कुछ ग्रीनहाउस वायु भी शामिल है जैसे कार्बन डाइ आक्साइड, नाइट्रोजन आक्साइड, मिथेन आदि। यह वायु जब वायुमंडल में बढ़ जाए तो धरती के ऊपर एक आवरण बना लेती है। यही आवरण परावर्तित होकर लौटती किरणों के एक भाग को रोक देता है और इसी के कारण पृथ्वी का वातावरण लगातार गर्म हो रहा है। इसी को ग्लोबल वार्मिंग कहते हैं। दुनिया के कई बड़े वैज्ञानिकों के अनुसार 21वीं सदी की सबसे बड़ी समस्या ग्लोबल वार्मिंग है। वैज्ञानिकों ने इसकी मिसाल तृतीय विश्वयुद्ध दी है। उनके मुताबिक तृतीय विश्वयुद्ध से होने वाले नुकसान से 10 गुना ज्यादा ग्लोबल वार्मिंग का नुकसान होगा।

मूल शब्द: वातावरण, तापमान, पर्यावरण, उत्सर्जन, विकिरण, वायुमंडल।

I. प्रस्तावना

आसान शब्दों में समझें तो ग्लोबल वार्मिंग का अर्थ है 'पृथ्वी के तापमान में वृद्धि और इसके कारण मौसम में होने वाले परिवर्तन' पृथ्वी के तापमान में हो रही इस वृद्धि (जिसे 100 सालों के औसत तापमान पर 10 फारेनाइट आँका गया है) के परिणाम स्वरूप बारिश के तरीकों में बदलाव, हिमखण्डों और ग्लेशियरों के पिघलने, समुद्र के जलस्तर में वृद्धि और वनस्पति तथा जन्तु जगत पर प्रभावों के रूप के सामने आ सकते हैं। ग्लोबल वार्मिंग दुनिया की कितनी बड़ी समस्या है, यह बात एक आम आदमी समझ नहीं पाता है। उसे ये शब्द थोड़ा टेक्निकल लगता है। इसलिये वह इसकी तह तक नहीं जाता है, लिहाजा इसे एक वैज्ञानिक परिभाषा मानकर छोड़ दिया जाता है। ज्यादातर लोगों को लगता है कि फिलहाल संसार को इससे कोई खतरा नहीं है। भारत में भी ग्लोबल वार्मिंग एक प्रचलित शब्द नहीं है और भाग-दौड़ में लगे रहने वाले भारतीयों के लिये भी इसका अधिक कोई मतलब नहीं है। लेकिन विज्ञान की दुनिया की बात करें तो ग्लोबल वार्मिंग को लेकर भविष्यवाणियाँ की जा रही हैं। इसको 21वीं शताब्दी का सबसे बड़ा खतरा बताया जा रहा है। यह खतरा तृतीय विश्वयुद्ध या किसी क्षुद्रग्रह (एस्टेराइड) के पृथ्वी से टकराने से भी बड़ा माना जा रहा है।

विशेषज्ञ बार-बार चेतावनियां दे रहे हैं कि अगर अगले आठ-दस सालों में इस दिशा में कुछ सार्थक न किया गया तो भयावह भविष्य से हमारा सामना होगा। इस मसले पर बार-बार एक ही सवाल उठता है कौन इसके लिए ईमानदारी से पहल करे? जब अमेरिका जैसा विकसित देश जो पर्यावरण को बिगाड़ने में दुनिया में सबसे आगे है, वही इस मुद्दे को गंभीरता से नहीं लेता तब गरीब और विकासशील देशों से कैसे उम्मीद की जा सकती है कि वे अपने विकास की बिना पर इस मामले में गंभीर रुख अख्तियार करें।

वायुमंडल में ग्रीन हाउस गैसों, खासकर कार्बन डाइ ऑक्साइड के उत्सर्जन में लगातार हो रही वृद्धि से उत्पन्न पृथ्वी की गरमाहट क्या गुल खिला सकती है, इसकी चेतावनी इस वर्ष के विश्व पर्यावरण दिवस की पूर्व संध्या पर संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम (यूएनईपी) ने पेश की है। यूएनईपी की 'ग्लोबल आउटलुक फॉर आइस एंड स्नो' रिपोर्ट में कहा गया है कि ग्लेशियरों, हिम चारों और हिम

शिखरों के पिघलने से दुनिया की 40 प्रतिशत आबादी प्रभावित हो सकती हैं।

ग्लोबल वार्मिंग का यह प्रभाव समुद्री जल स्तर बढ़ने, सुखा पड़ने, पेयजल का संकट और सिंचाई के लिए पानी उपलब्ध न होने के तौर पर होगा। सबसे चिंता की बात यह है कि ग्लोबल वार्मिंग का प्रभाव एशियाई जनसंख्या पर अधिक पड़ेगा। करीब 1.5 अरब एशियाई इसकी चपेट में आयेंगे। न केवल समुद्रतटीय शहर डूब जाएंगे, बल्कि गंगा, ब्रह्मपुत्र, नील व मीकांग जैसी बड़ी नदियों के किनारे बसे करोड़ों लोग इसकी चपेट में आयेंगे। मौजूदा दौर में पर्यावरणविदों और वैज्ञानिकों की सबसे बड़ी चिंता हिमनदों और लेशियरों को पिघलने से रोकने की है।

इसकी वजह यह है कि बर्फ और हिम पृथ्वी पर पड़ने वाली 70 प्रतिशत सूर्य ऊर्जा को प्रत्यावर्तित कर देती है, जबकि महासागर उस ऊर्जा को सोखकर गर्म लहरों की आवृत्ति को बढ़ा देते हैं। यदि ग्रीनलैंड और अंटार्कटिका का 20 प्रतिशत हिस्सा भी पिघला तो समुद्र का जल स्तर 5 मीटर बढ़ जाएगा। पिछले 200 सालों में ही ग्रीनलैंड की हिमचादरों के पिघलने की रफ्तार दो गुनी हुई है। दूसरी तरफ यह भी पाया गया कि उत्तरी गोलार्ध में इसी साल मार्च और अप्रैल में हिमाच्छादित क्षेत्र में 7 से 8 प्रतिशत की कमी आई है।

ग्लोबल वार्मिंग के कारण होने वाले जलवायु परिवर्तन के लिये सबसे अधिक जिम्मेदार ग्रीन हाउस गैस हैं। ग्रीन हाउस गैसों, वे गैसों होती हैं जो बाहर से मिल रही गर्मी या ऊष्मा को अपने अंदर सोख लेती हैं। ग्रीन हाउस गैसों का इस्तेमाल सामान्यतः अत्यधिक सर्द इलाकों में उन पौधों को गर्म रखने के लिये किया जाता है जो अत्यधिक सर्द मौसम में खराब हो जाते हैं। ऐसे में इन पौधों को काँच के एक बंद घर में रखा जाता है और काँच के घर में ग्रीन हाउस गैस भर दी जाती है। यह गैस सूरज से आने वाली किरणों की गर्मी सोख लेती है और पौधों को गर्म रखती है। ठीक यही प्रक्रिया पृथ्वी के साथ होती है। सूरज से आने वाली किरणों की गर्मी की कुछ मात्रा को पृथ्वी द्वारा सोख लिया जाता है। इस प्रक्रिया में हमारे पर्यावरण में फैली ग्रीन हाउस गैसों का महत्वपूर्ण योगदान है।

अगर इन गैसों का अस्तित्व हमारे में न होता तो पृथ्वी पर तापमान वर्तमान से काफी कम होता। ग्रीन हाउस गैसों में सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण गैस कार्बन डाइ आक्साइड है, जिसे हम जीवित प्राणी अपने साँस के साथ उत्सर्जित करते हैं। पर्यावरण वैज्ञानिकों का कहना है कि पिछले कुछ वर्षों में पृथ्वी पर कार्बन डाइ आक्साइड गैस की मात्रा लगातार बढ़ी है। वैज्ञानिकों द्वारा कार्बन डाइ आक्साइड के उत्सर्जन और तापमान वृद्धि में गहरा सम्बन्ध बताया जाता है। सन 2006 में एक डाक्यूमेंट्री फिल्म आई- 'द इन्क-वीनियेंट टुथ' यह डाक्यूमेंट्री फिल्म तापमान वृद्धि और कार्बन उत्सर्जन पर केन्द्रित थी। इस फिल्म में मुख्य भूमिका में थे- अमेरिकी उपराष्ट्रपति 'अल गोर' और इस फिल्म का निर्देशन 'डेविड गुन्हेम' ने किया था। इस फिल्म में ग्लोबल वार्मिंग को एक विभीषिका की तरह दर्शाया गया, जिसका प्रमुख कारण मानव गतिविधि जनित कार्बन डाइ आक्साइड गैस माना गया। इस फिल्म को सम्पूर्ण विश्व में बहुत सराहा गया और फिल्म को सर्वश्रेष्ठ डाक्यूमेंट्री का आस्कर एवार्ड भी मिला।

यद्यपि ग्लोबल वार्मिंग पर वैज्ञानिकों द्वारा शोध कार्य जारी है, मगर मान्यता यह है कि पृथ्वी पर हो रहे तापमान वृद्धि के लिये जिम्मेदार कार्बन उत्सर्जन है जोकि मानव गतिविधि जनित है। इसका प्रभाव विश्व के राजनीतिक घटनाक्रम पर भी पड़ रहा है। सन 1988 में 'जलवायु परिवर्तन पर अन्तरशासकीय दल' का गठन किया गया था। सन 2007 में इस अन्तरशासकीय दल और तत्कालीन अमेरिकी उपराष्ट्रपति 'अल गोर' को शांति का नोबल पुरस्कार दिया गया। आई.पी.सी.सी. वस्तुतः एक ऐसा अन्तरशासकीय वैज्ञानिक संगठन है जो जलवायु परिवर्तन से जुड़ी सभी सामाजिक, आर्थिक जानकारियों को इकट्ठा कर उनका विश्लेषण करता है। आई.पी.सी.सी. का गठन सन 1988 में संयुक्त राष्ट्र संघ की जनरल असेंबली के दौरान हुआ था। यह दल खुद शोध कार्य नहीं करता और न ही जलवायु के विभिन्न कारकों पर नजर रखता है। यह दल सिर्फ प्रतिष्ठित जर्नल में प्रकाशित शोध पत्रों के आधार पर जलवायु को प्रभावित करने वाले मानव जनित कारकों से सम्बन्धित राय को अपनी रिपोर्ट्स के जरिए सरकारों और आम जनता तक पहुँचाता है।

आई.पी.सी.सी. की रिपोर्ट के अनुसार मानवजनित ग्रीन हाउस गैसों वर्तमान में पर्यावरण में हो रहे तापमान वृद्धि के लिये पूरी तरह से जिम्मेदार हैं, जिनमें कार्बन डाइऑक्साइड की मात्रा सबसे ज्यादा है। इस रिपोर्ट में कहा गया है कि ग्लोबल वार्मिंग में 90 प्रतिशत योगदान मानवजनित कार्बन उत्सर्जन का है। जबकि प्रो. यू.आर. राव अपने शोध के आधार पर कह रहे हैं कि ग्लोबल वार्मिंग में 40 प्रतिशत योगदान तो सिर्फ कास्मिक विकिरण का है। इसके अलावा कई अन्य कारक भी हैं जिनका ग्लोबल वार्मिंग में योगदान है और उन पर शोध कार्य जारी है।

भारतीय अंतरिक्ष एजेंसी द्वारा 'इसरो' के पूर्व चेयरमैन और भौतिकविद प्रो. यू.आर. राव अपने शोध-पत्र में लिखते हैं कि अंतरिक्ष से पृथ्वी पर आपतित हो रहे कास्मिक विकिरण का सीधा सम्बन्ध सौर-क्रियाशीलता से होता है। अगर सूरज की क्रियाशीलता बढ़ती है तो ब्रह्माण्ड से आने वाला कास्मिक विकिरण निचले स्तर के बादलों के निर्माण में प्रमुख भूमिका निभाता है। इस बात की पेशकश सबसे पहले स्वेन्समार्क और क्रिस्टेन्सन नामक वैज्ञानिकों ने की थी। निचले स्तर के बादल सूरज से आने वाले विकिरण को परावर्तित कर देते हैं, जिस कारण से पृथ्वी पर सूरज से आने वाले विकिरण के साथ आई गर्मी भी परावर्तित होकर ब्रह्माण्ड में वापस चली जाती है।

वैज्ञानिकों ने पाया कि सन 1925 से सूरज की क्रियाशीलता में लगातार वृद्धि हुई। जिसके कारण पृथ्वी पर आपतित होने वाले कास्मिक विकिरण में लगभग 9 प्रतिशत कमी आई है। इस विकिरण में आई कमी से पृथ्वी पर बनने वाले खास तरह के निचले स्तर के बादलों के निर्माण में भी कमी आई है, जिससे सूरज से आने वाला विकिरण सोख लिया जाता है और इस कारण से पृथ्वी के तापमान में वृद्धि का अनुमान लगाया जा सकता है। प्रो. राव के निष्कर्ष के अनुसार ग्लोबल वार्मिंग में इस प्रक्रिया का 40 प्रतिशत योगदान है जबकि कास्मिक विकिरण सम्बन्धी जलवायु ताप की प्रक्रिया मानव गतिविधि जनित नहीं है और न ही मानव इसे संचालित कर सकता है। इस तरह यह शोध आई.पी.सी.सी के इस निष्कर्ष का खंडन करता है कि ग्लोबल वार्मिंग में 90 प्रतिशत योगदान मानव का है। अगर ग्लोबल वार्मिंग के अन्य कारकों का अध्ययन किया जाए तो ग्लोबल वार्मिंग में मानव-गतिविधियों का योगदान आई.पी.सी.सी. की रिपोर्ट की अपेक्षा बहुत कम होगा।

II. ग्लोबल वार्मिंग के प्रभाव

- गर्मी में वृद्धि - 1901 से लगातार दुनिया के अनेक स्थानों में असाधारण रूप से रिकार्ड गर्मी दर्ज की गयी है। तापमान बढ़ने और गर्म हवाओं के चलने से जहां बीमारियां बढ़ी है, वहीं इससे मौतों में बड़ी वृद्धि हुई।
- समुद्रों का बढ़ता जलस्तर - तापमान में बढ़ोत्तरी के चलते पर्वतीय ग्लेशियर तेजी से पिघल रहे हैं। इसके चलते समुद्र का पानी विस्तारित हो रहा है और दुनिया में समुद्रों का जलस्तर बढ़ रहा है। पिछले 100 सालों में समुद्र के जलस्तर में 4 से 10 इंच (10-20) सेंटीमीटर की वृद्धि हुई है। अनुमान है कि अगले 100 सालों में इसमें 1 से 3 फुट की वृद्धि होगी। इस स्तर में प्रत्येक एक फुट की वृद्धि से 50 से 100 फुट तटीय क्षेत्र खत्म हो जायेगा।
- पिघलते ग्लेशियर - पिछले 150 सालों में दुनिया के ज्यादातर ग्लेशियर सिकुड़ रहे हैं। कम ऊँचाई पर स्थित ग्लेशियर लुप्त होते जा रहे हैं और वैज्ञानिकों के मुताबिक ग्लोबल वार्मिंग की मौजूदा प्रवृत्ति के चलते वर्ष 2100 तक ज्यादातर ग्लेशियरों का अस्तित्व ही खत्म हो जायेगा। ग्लेशियरों के सिकुड़ते रहने से गर्मियों में होने वाले जल प्रवाह में तेजी से कमी आयेगी और इससे बहुत क्षेत्रों में सिंचाई और ऊर्जा उत्पादन अस्त-व्यस्त हो जायेगा।
- नंगे होते आर्कटिक और अंटार्कटिक - पिछले कुछ दशकों से कनाडा, अलास्का, साबेरिया और अंटार्कटिका के हिस्से औसत से ज्यादा गर्मी से गुजर रहे हैं। ग्रीनहाउस गैसों के स्तर में हो रही वृद्धि से ग्लोबल वार्मिंग का प्रभाव यहां स्पष्ट देखा जा रहा है। आर्कटिक और अंटार्कटिका की हिमचादरें लगातार पतली हो रही है।

III. ग्लोबल वार्मिंग के लक्षण

- फैलती बीमारियां - गर्म तापमान मच्छरों के लिए अनुकूल होता है, जिससे ये मलेरिया और डेंगू जैसी बीमारियों को तेजी से फैलाते हैं। तापमान बढ़ने से मच्छरों का फैलाव उन क्षेत्रों में भी होने लगता है, जहां पहले वे कभी नहीं होते थे।
- बसंत का जल्दी आगमन - पिछले कुछ दशकों से दुनिया के अनेक हिस्सों में समय से पहले ही बसंत का आगमन देखा गया है। नदियों और झीलों का समय से पहले पिघलना, पेड़-पौधों में समय से पहले फूलों का खिलना, पक्षियों द्वारा समय से पहले अंडे देना आदि इसके उदाहरण हैं। बसंत का यह समय पूर्व आगमन जंतुओं की प्रवास प्रक्रिया को अस्त व्यस्त कर पारिस्थितिकीय प्रणाली में अनेक समस्याएं पैदा कर रहा है।
- वनस्पति और जंतुओं का प्रभाव - देखा गया है कि जंतु और वनस्पतियां गर्म तापमान के कारण ऊँचाई की तरफ मुड़ते हैं। अध्ययनों में यह बात समाने आयी है कि गर्म मौसम की स्थितियों के चलते अनेक प्रजातियों ने अपना ठिकाना बदल दिया है। ऐसे में यदि ग्लोबल वार्मिंग की यही रफ्तार रही तो बहुत सी प्रजातियां नष्ट हो जायेंगी।
- खतरे में मूंगा भित्ति - ऑस्ट्रेलिया की ग्रेट बैरियर रीफ समेत 32 देशों में मूंगा भित्तियों पर ब्लीचिंग के कारण लगातार खतरा मंडरा रहा है। ब्लीचिंग तब होती है, जब सूक्ष्म कार्बोनेट खत्म होने लगती है। यही सूक्ष्म कार्बोनेट जीवित मूंगों को पोषण और रंग प्रदान करती हैं। ब्लीचिंग तब होता है, समुद्र के पानी का तापमान 1.1 से 1.5 डिग्री सेल्सियस तक गर्म हो जाता है।
- भारी बर्फवारी, बाढ़ और मूसलाधार वर्षा - गर्म जलवायु के कारण मौसम चक्र तेजी से प्रभावित हो रहा है। दुनिया के अनेक हिस्सों में असमय अति वृष्टि, बाढ़, जबर्दस्त बर्फवारी, मूसलाधार वर्षा होना अब सामान्य बात हो गयी है।
- सूखा और आग - जलवायु के गर्म होने से बार बार सूखे की समस्या आने लगी है। निरंतर सूखे की स्थिति होने से जंगल आग से नष्ट हो जाते हैं।

ग्रीन हाउस गैस वो गैस होती है जो पृथ्वी के वातावरण में प्रवेश कर यहाँ का तापमान बढ़ाने में कारक बनती है। वैज्ञानिकों के अनुसार इन गैसों का उत्सर्जन अगर इसी प्रकार चलता रहा तो 21वीं शताब्दी में पृथ्वी का तापमान 3 डिग्री से 8 डिग्री सेल्सियस तक बढ़ सकता है। अगर ऐसा हुआ तो इसके परिणाम बहुत घातक होंगे। दुनिया के कई हिस्सों में बिछी बर्फ की चादरें पिघल जाएँगी, समुद्र का जल स्तर कई फीट ऊपर तक बढ़ जाएगा। समुद्र के इस बर्ताव से दुनिया के कई हिस्से जलमग्न हो जाएँगे, भारी तबाही मचेगी। यह तबाही किसी विश्वयुद्ध या किसी 'ऐस्टेराइड' के पृथ्वी से टकराने के बाद होने वाली तबाही से भी बढ़कर होगी। हमारे ग्रह पृथ्वी के लिये भी यह स्थिति बहुत हानिकारक होगी।

- ग्रीन हाउस गैसों का उत्सर्जन - माना जा रहा है कि इसकी वजह से उष्णकटिबंधीय रेगिस्तानों में नमी बढ़ेगी। मैदानी इलाकों में भी इतनी गर्मी पड़ेगी जितनी कभी इतिहास में नहीं पड़ी। इस वजह से विभिन्न प्रकार की जानलेवा बीमारियाँ पैदा होंगी। हमें ध्यान में रखना होगा कि हम प्रकृति को इतना नाराज न कर दें कि वह हमारे अस्तित्व को खत्म करने पर ही आमादा हो जाए। हमें इन सब बातों का ख्याल रखना पड़ेगा।

आज हर व्यक्ति पर्यावरण की बात करता है। प्रदूषण से बचाव के उपाय सोचता है। व्यक्ति स्वच्छ और प्रदूषण मुक्त पर्यावरण में रहने के अधिकारों के प्रति सजग होने लगा है और अपने दायित्वों को समझने लगा है। वर्तमान में विश्व ग्लोबल वार्मिंग के सवालियों से जूझ रहा है। इस सवाल का जवाब जानने के लिये विश्व के अनेक देशों में वैज्ञानिकों द्वारा प्रयोग और खोजें हुई हैं। उनके अनुसार अगर प्रदूषण फैलने की रफ्तार इसी तरह बढ़ती रही तो अगले दो दशकों में धरती का औसत तापमान 0.3 डिग्री सेल्सियस प्रति दशक के दर से बढ़ेगा, जो चिंताजनक है।

तापमान की इस वृद्धि से विश्व के सारे जीव-जंतु बेहाल हो जाएँगे और उनका जीवन खतरे में पड़ जाएगा। पेड़-पौधों में भी इसी तरह का बदलाव आएगा। सागर के आस-पास रहने वाली आबादी पर इसका सबसे ज्यादा असर पड़ेगा। जल स्तर ऊपर उठने के कारण सागर तट पर बसे ज्यादातर शहर इन्हीं सागरों में समा जाएँगे। हाल ही में कुछ वैज्ञानिक अध्ययन बताते हैं कि जलवायु में बिगाड़ का सिलसिला इसी तरह जारी रहा तो कुपोषण और विषाणु जनित रोगों से होने वाली मौतों की संख्या में भारी बढ़ोत्तरी हो सकती है।

जब किसी प्राकृतिक आपदा का पहाड़ टूटता है, तब उसकी चपेट में अमीर और गरीब दोनों ही आते हैं। प्रकृति भेदभाव नहीं करती, न खुशी में, न ही नाराजगी में। लेकिन जलवायु परिवर्तन पर पिछले कई सम्मेलनों में विकसित और विकासशील देशों ने एक दूसरे देशों पर आरोप लगाए हैं बजाय इस स्थिति को सुधारने की दिशा में। विकासशील देशों का कहना है कि पहले यह तय होना चाहिए कि ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन के लिए विकसित देश कितने जिम्मेदार हैं। इनका तर्क है कि 1950 से पहले अमीर देश 95 प्रतिशत ग्रीन हाउस ग्लोबल वार्मिंग के लिए जिम्मेदार थे। 1950 से 2000 के बीच वे 77 प्रतिशत गैसों का उत्सर्जन कर रहे थे। इन देशों को यह तथ्य स्वीकार करना चाहिए।

लेकिन विकसित देश अपनी गलतियों को स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं है। दरअसल विकसित देश विकासशील देशों की शर्त पर पर्यावरण का सुधार देखना चाहते हैं। अमेरिका आज ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन में पूरी दुनिया में नंबर एक है। रियो डि जेनेरियो के पृथ्वी सम्मेलन से आज तक जब भी ग्लोबल वार्मिंग और पर्यावरण प्रदूषण को लेकर उस पर जवाबदेही की बात उठी तो उसका गैर-जिम्मेदाराना व्यवहार ही सामने आया। फिलहाल विकसित देशों की रणनीति यह है कि तेजी से उभर रही चीन, भारत और ब्राजील जैसी अर्थव्यवस्थाओं को इस बहाने घेरा जाये। इसलिए यूरोपीय संघ कहता है कि जब हम इन तीन देशों से कोई वादा करने को कहते हैं तो इसका मतलब यह नहीं कि ये भी वही सब कुछ करें, जो विकसित देश कर रहे हैं।

प्रलय की ओर बढ़ रही दुनिया के सभी देशों को समान रूप से इसकी भयावहता के बारे में विचार करना होगा। लेकिन स्वाभाविक रूप से जो ग्लोबल वार्मिंग के सबसे बड़े गुनाहगार हैं, उनकी जिम्मेदारी है कि वे गुनाह के मुताबिक इसकी भरपाई करने के लिए भी तैयार रहे।

IV. निष्कर्ष

ग्लोबल वार्मिंग और ऊर्जा की बर्बादी पर अंकुश लगाने के लिए चलाए जा रहे जागरूकता अभियान '15 मिनट्स ऑफ रेस्माइट फॉर द प्लेनेट' के तहत पिछले कुछ वर्षों से एफिल टॉवर की स्पॉट लाइट पांच मिनट के लिए बंद की जा रही है। इसका उद्देश्य है कि ऊर्जा के उपयोग की शैली में व्यापक बदलाव लाकर ग्लोबल वार्मिंग की समस्या पर नियंत्रण संभव है।

इंटरगवर्नमेंटल पैनेल ऑफ क्लाइमेट चेंज के अनुसार मौसम मॉडल यह भविष्यवाणी कर रहे हैं कि 21वीं सदी के अंत तक वैश्विक तापमान 1.4 डिग्री सेंटीग्रेड तक चढ़कर 5.8 डिग्री सेंटीग्रेड पहुंच जाएगा। इस संबंध में विशेषज्ञों का कहना है कि संसाधनों के उपयोग की शैली में व्यापक बदलाव लाकर ग्लोबल वार्मिंग की समस्या पर नियंत्रण संभव है।

इस क्रम में वाहनों एवं अन्य उपकरणों की क्षमता में इजाफा करना जरूरी है ताकि कार्बन डाइ ऑक्साइड के उत्सर्जन पर भी नियंत्रण रखा जा सके। आईईई के अनुसार वातावरण का तापमान बढ़ाने वाली ग्रीन हाउस गैसों के उपार्जन में कमी की रणनीति को प्रभावी रूप से लागू करने के लिए अधिक माइलेज वाली कारों और बेहतर इमारतों के निर्माण पर करीब 2.4 ट्रिलियन डॉलर राशि व्यय की जरूरत होगी जबकि इसके जरिए कालांतर में तेल और बिजली के खर्च में 8.1 ट्रिलियन डॉलर की कमी लाई जा सकती है। पृथ्वी ने हमें हवा, पानी, अन्न और रहने के लिए जगह दी। आज वही पृथ्वी हमारे कर्मों के कारण ही धीरे-धीरे अपनी अस्तित्व खोती नजर आ रही है और हम मूक दर्शक बने तमाशा देख रहे हैं। ग्लोबल वार्मिंग घुन की तरह है जो धीरे-धीरे पृथ्वी को नष्ट करती जा रही

है।

बहरहाल, जिस तरह से जलवायु में आये दिन दिखने वाले बदलाव को लोग महसूस कर रहे हैं और उन्हें लगने लगा है कि यह ग्लोबल वार्मिंग का ही प्रभाव है, और इस भयावह संकट के कारण पर्यावरण के प्रति जागरूकता जगाने की जरूरत है। सिर्फ सरकारें ही इस मामले में बदलाव नहीं ला सकती। सबको प्रकृति और पर्यावरण से आत्मीय संबंध बनाने होंगे। वैसे सही मायने में ग्लोबल वार्मिंग को रोकने का कोई इलाज नहीं है। इसके बारे में सिर्फ जागरूकता फैलाकर ही इससे लड़ा जा सकता है। स्कूली स्तर पर बच्चों को पर्यावरण का पाठ पढ़ाना होगा। तभी हम और हमारी पृथ्वी सुरक्षित रह पायेगी। हमें अपनी पृथ्वी को सही मायनों में 'ग्रीन' बनाना होगा। अपने 'कार्बन फुटप्रिंट्स' (प्रति व्यक्ति कार्बन उत्सर्जन को मापने का पैमाना) को कम करना होगा।

संदर्भ सूची

1. सिंह, सवीन्द्र, पर्यावरण भूगोल का स्वरूप, प्रवालिका पब्लिकेशन्स, इलाहाबाद, 2021
2. शर्मा, एच.एस., शर्मा, एम. एल. एवं मिश्रा, आर. एन. भौतिक भूगोल, पंचशील प्रकाशन, जयपुर, 2022
3. रिपोर्ट, दक्षिण एशिया के हॉटस्पॉट: तापमान और वर्षण में परिवर्तन का जीवन-स्तर पर प्रभाव, विश्व बैंक समूह, 2021
4. नारायण, सुनीता (पर्यावरणविद्), जलवायु परिवर्तन के अवश्यभावी प्रभाव, बिजनेस स्टैंडर्ड, दिनांक 14.2.23
5. सक्सेना, के. जी., जलवायु परिवर्तन और सम्पोषणीय विकास, योजना, प्रकाशन विभाग, दिल्ली, दिसम्बर 2019
6. दैनिक भास्कर, राजस्थान
7. इण्डियन एक्सप्रेस
8. योजना
9. कुरुक्षेत्र
10. इण्डिया टुडे
11. आउटलुक
12. प्रतियोगिता दर्पण



International Journal of Advanced Research in Education and Technology

ISSN: 2394-2975

Impact Factor: 7.394